

भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली का 64वाँ दीक्षांत समारोह

दिनांक: 10 फरवरी 2026

भाकृअनुप -भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएआरआई), नई दिल्ली का 64वाँ दीक्षांत समारोह 10 फरवरी 2026 (तृतीय दिवस) को आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के कृषि अभियांत्रिकी सभागार में प्रोफेसरों की प्रस्तुतियों के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता द्वारा किया गया तथा इसका आयोजन डॉ. जसदीप सी. पड़ारिया, प्रोफेसर (एमबीबी) के संयोजकत्व में, डॉ. श्रुति सेठी, प्रधान वैज्ञानिक (एफएस एंड पीएचटी) के सह-संयोजकत्व में किया गया। कार्यक्रम में फसल सुधार विद्यालय, फसल सुरक्षा विद्यालय, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विद्यालय तथा मूलभूत विज्ञान विद्यालय से उभरते प्रमुख वैज्ञानिक योगदानों को रेखांकित किया गया।

सत्र-I: फसल सुधार इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. बी. एम. प्रसन्ना, विशिष्ट वैज्ञानिक, सीआईएमएमवाईटी एवं निदेशक, सीआईएमएमवाईटी-एशिया ने की। इसमें डॉ. सी. भारद्वाज (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), डॉ. सुनील आर्चक (पादप आनुवंशिक संसाधन) तथा डॉ. ज्ञान मिश्रा (बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) ने प्रस्तुतियाँ दीं। फसल सुधार विद्यालय ने फसल आनुवंशिकी एवं प्रजनन में महत्वपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी दी, जिनके अंतर्गत अनाज, दलहन, तिलहन एवं बागवानी फसलों में 100 से अधिक उन्नत किस्मों एवं उन्नत प्रजनन रेखाओं का विकास एवं मूल्यांकन शामिल है। शोध उपलब्धियों में जैव-सुदृढीकृत किस्मों, जलवायु-लचीली प्रजातियाँ तथा सूखा, ऊष्मा, लवणता एवं प्रमुख जैविक तनावों के प्रति सहनशील जीनोटाइप सम्मिलित हैं। विद्यालय ने हजारों पादप आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण एवं विशेषण के साथ-साथ बीज विज्ञान एवं गुणवत्ता संवर्धन प्रौद्योगिकियों में भी योगदान दिया है, जो राष्ट्रीय खाद्य एवं पोषण सुरक्षा लक्ष्यों को प्रत्यक्ष समर्थन प्रदान करते हैं।

सत्र-II: फसल सुरक्षा इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी. डी. मई, पूर्व अध्यक्ष, एसआरबी, नई दिल्ली ने की। तकनीकी प्रस्तुतियाँ डॉ. सुमन गुप्ता (कृषि रसायन), डॉ. सुब्रमण्यम एस. (कीट विज्ञान), डॉ. अनिल सिरोही (सूत्रकृमि विज्ञान) तथा डॉ. औंदी कुमार (पादप रोग विज्ञान) द्वारा दी गईं। फसल सुरक्षा विद्यालय ने फसल स्वास्थ्य संरक्षण हेतु 80 से अधिक मान्यीकृत प्रौद्योगिकियों एवं प्रबंधन मॉड्यूलों पर आधारित प्रभावशाली अनुसंधान उपलब्धियों को रेखांकित किया, जो कीट विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, सूत्रकृमि विज्ञान एवं कृषि रसायन के क्षेत्रों से संबंधित हैं। शोध निष्कर्षों ने समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन (आईपीडीएम) दृष्टिकोण को बल दिया है, जिसके माध्यम से प्रमुख फसल प्रणालियों में कीटनाशक उपयोग में 20-40 प्रतिशत तक कमी संभव हुई है। योगदानों में पर्यावरण-अनुकूल कीट नियंत्रण रणनीतियाँ, रोग निदान तकनीकें, प्रतिरोधी स्रोत एवं जैव-नियंत्रण कारकों का विकास शामिल है, जो सतत एवं पर्यावरणीय रूप से उत्तरदायी फसल सुरक्षा को सुदृढ करते हैं।

सत्र-III: प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. वी. एन. शारदा, पूर्व सदस्य, एसआरबी, नई दिल्ली ने की। प्रस्तुतियाँ डॉ. मुर्तजा हसन (कृषि अभियांत्रिकी), डॉ. पी. कृष्णन (कृषि भौतिकी), डॉ. वाई. एस. शिवाय (कृषि विज्ञान/एग्रोनॉमी), डॉ. डी. के. शर्मा (पर्यावरण विज्ञान), डॉ. राजीव कौशिक

(सूक्ष्मजैविकी), डॉ. टी. जे. पुरकायस्थ (मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन) तथा डॉ. खजांची लाल (जल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) द्वारा दी गई। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विद्यालय ने स्थिरता एवं जलवायु लचीलापन पर केंद्रित बहुविषयी शोध उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। शोध निष्कर्षों में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल उपयोग दक्षता, प्रेसिजन कृषि, कृषि अभियांत्रिकी नवाचार तथा जलवायु-स्मार्ट पद्धतियों से संबंधित 90 से अधिक प्रौद्योगिकियाँ, मॉडल एवं निर्णय-सहायक उपकरण शामिल हैं। इन शोध परिणामों से संसाधन उपयोग दक्षता में 10-25 प्रतिशत तक सुधार, मृदा उर्वरता में वृद्धि तथा जल उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित हुआ है, जो लचीली एवं सतत कृषि उत्पादन प्रणालियों को सुदृढ़ बनाते हैं।

सत्र-IV: मूलभूत विज्ञान इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. के. शासनी, निदेशक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई), लखनऊ ने की। इसमें डॉ. रंजीत आर. कुमार (जैव रसायन), डॉ. जसदीप सी. पड़रिया (आणविक जीवविज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी) तथा डॉ. अंजलि आनंद (पादप शरीर क्रिया विज्ञान) ने योगदान प्रस्तुत किए। मूलभूत विज्ञान विद्यालय ने अनुप्रयुक्त कृषि नवाचार की आधारशिला रखने वाले मूलभूत अनुसंधान को रेखांकित किया। शोध योगदानों में जैव रसायन, आणविक जीवविज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी एवं पादप शरीर क्रिया विज्ञान के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ शामिल हैं, जो गुणों की खोज, तनाव शरीर क्रिया विज्ञान एवं आणविक विशेषण को समर्थन प्रदान करती हैं। जीनोमिक्स, आणविक मार्कर, चयापचयी प्रोफाइलिंग तथा शारीरिक स्क्रीनिंग उपकरणों में प्रगति ने अनुवादात्मक अनुसंधान प्रक्रियाओं को सुदृढ़ किया है तथा उन्नत किस्म विकास, तनाव सहनशीलता अनुसंधान एवं अगली पीढ़ी की कृषि प्रौद्योगिकियों को समर्थन प्रदान किया है।

प्रत्येक सत्र ने संक्षिप्त तकनीकी विचार-विमर्श के लिए एक प्रभावी मंच प्रदान किया तथा अध्यक्षीय टिप्पणियों के साथ संपन्न हुआ, जिनमें अंतर्विषयी अनुसंधान एकीकरण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं किसान-केंद्रित नवाचार पर बल दिया गया। समग्र रूप से, कार्यक्रम ने सैकड़ों किस्मों, प्रौद्योगिकियों, उपकरणों एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के संचयी योगदान को रेखांकित किया, जो खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, स्थिरता एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण से संबंधित राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को निरंतर संबोधित कर रहे हैं।





आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली के 64वें दीक्षांत कार्यक्रम (10.02.2026) के तृतीय दिवस की झलकियाँ